श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, राशमी

यह शिखरबंद मंदिर चित्तौड़गढ़ से 25 व कपासन से 20 किलोमीटर दूर है। मंदिर 500 वर्ष प्राचीन बताया जाता है। प्रतिमा पर भी उत्कीर्ण लेख भी 500 वर्ष करीब है। उल्लेखानुसार 1621 का निर्मित है।

मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :

1. श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक) श्याम पाषाण की 25'' ऊँची **प्राचीन** प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।
2. श्री शांतिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2011 माघ सुदि 6 का लेख है।
3. श्री संभवनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2011 माघ सुदि 6 का लेख है।

उत्थापित प्रतिमाएँ व यंत्र धातु की :

1. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 7'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं।

2. श्री जिनेश्वर भगवान की चतुर्विंशति प्रतिमा 12'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर दिनांक 15.11.08 का लेख है।

3. श्री बीस स्थानक यंत्र गोलाकार मय स्टेण्ड के 24'' का है।

4. श्री सुमतिनाथ भगवान की 5'' ऊँची **पंचतीर्थी** प्रतिमा है। इस पर संवत् 1551 माघ वदि 2 सोमवार का लेख है।

5. श्री सिद्धचक्र यंत्र 7.5'' का है। इस पर वीर सं. 2327 का लेख है।

6. श्री अष्टमंगल यंत्र 5'' x 2.5'' का है। इस पर संवत् 2065 का लेख है।

7. श्री जिनेश्वर भगवान की 3'' (मय स्टेण्ड) व 5'' (ऊँचा मंदिर) ऊँची है। इस पर लेख नहीं है।

8–9 श्री तांबा यत्र 3.5'' x 3.5'' , 3.5'' x 3.5'' के है।

वेदी के बीच प्रासाद देवी स्थापित है।

निज मंदिर के बाहर निकलते समय दाएं :

1. श्री पार्श्व यक्ष की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

बाएं :

श्री पद्मावती यक्ष की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इन दोनों प्रतिमाओं पर सं. 2036 वैशाख सुदि 7 का लेख है।

निज मंदिर से बाहर निकलते समय बाएं सभामण्डप में :

1. श्री मनमोहन पार्श्वनाथ भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 1545 वैशाख सुदि 7 का लेख है।

2. श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 1545 वैशाख सुदि 3 का लेख है।

3. श्री केशरियानाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्याम पाषाण की 12'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

इसके आगे श्री जिनकुशलसूरि के चरण 12'' गोलाई पाषाण पर 7''x 7'' की पादुका स्थापित है। इसके किनारे पर संवत् 1924 का लेख है।

निकलते समय दाएं :

1. श्री जिनेश्वर भगवान (सुपार्श्वनाथ लिखा हुआ) की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लांछण (चिन्ह) व लेख नहीं है।
2. श्री माणिभद्र की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

विशेष चमत्कार :

80 वर्ष पूर्व चोर चोरी करने आए थे सामान ले जाते समय उनके पांव चिपक गए थे सामान का नुकसान नहीं हुआ। चोरों को छोड़ दिया। मंदिर में प्राचीन गुफा है, कहा जाता है कि यह भीलवाड़ा (पुर) तक जाती है। द्वार पर दोनों ओर हाथी स्वागत के लिए स्थापित हैं। परिक्रमा कक्ष के तीनों ओर चित्रपट्ट लगाने की योजना है। दीवार पर जिनेश्वर भगवान व अप्सरा की प्रतिमा है।

वार्षिक ध्वजा पोष वदि 10 को चढ़ाई जाती है।

देखरेख समाज के प्रतिनिधि श्री मनोहरलाल जी पोखरना करते हैं।

सम्पर्क सूत्र - 01471-226158

जब तक खुद की भूलें नहीं
दिखतीं तब तक भगवान
नहीं बन सकते।

श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, जाशमा

यह शिखरबंद मंदिर 100 वर्ष प्राचीन है। मंदिर के बाहर संवत् 1972 वैशाख सूदि 10 का शिलालेख है। मंदिर पर ताला होने से पूर्ण जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :

1. श्री शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 23'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

मंदिर में दो चल प्रतिमाएँ है। मंदिर की करीब 3 बीघा जमीन है।

वार्षिक ध्वजा संवत्सरी पर्व के दिन चढ़ाई जाती है।

इसकी देखरेख समाज की ओर से श्री नाथूलाल जी संचेती करते हैं।

सम्पर्क सूत्र - 9982506485

श्री शीतलनाथ भगवान का मंदिर, पहुँना

यह शिखरबंद मंदिर चित्तौड़ व कपासन से 25 किलोमीटर दूर है। यह मंदिर करीब 150 वर्ष प्राचीन है। उल्लेखानुसार संवत् 1900 के लगभग निर्मित है। पूर्व में यह मंदिर श्री आदिनाथ भगवान का रहा है। पहुंना ग्राम संवत् 1224 में पूर्णिया जाट अपने सात परिवार के साथ यहा बसे, उसी के नाम से पूर्णिया गांव बाद में अपभ्रंश पहुंना कहलाने लगा। धीरे-धीरे अन्य जाति के लोग बसने लगे और यह गांव होल्कर सिंधिया के अधीन रहा। वि.सं. 1618 में राणावत को यहां की जागीरी दी। पहले यहां पर यति विराजमान थे। यति जी के पास भूमि, कुआं भी था, बेच दिये गये। यति खेमराज जी, नन्दलाल जी, शिवचंद जी, जगतचंद्र जी थे, वे ही मंदिर के पास रहते थे। पूर्व में मंदिर ग्राम के नीचे की ओर था। यह तृतीय श्रेणी का ठिकाना रहा है। यहां के शासक राणावत कहलाते हैं।

मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :

1. श्री शीतलनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2035 का लेख है।
2. श्री विमलनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2041 का लेख है।

3. श्री आदीश्वर भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 1925 आषाढ़ सुदि 10 का लेख है।

उत्थापित चल प्रतिमाएँ व यंत्र धातु की :

1. श्री शांतिनाथ भगवान की 6.5'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर संवत् 1361 का लेख है।
2. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की 9'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर संवत् 2040 का लेख है।
3. श्री पार्श्वनाथ भगवान की चतुर्विंशति प्रतिमा 12'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2040 का लेख है।
4. श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 5'' का है। इस पर संवत् 2026 वैशाख सुदि 5 सोमवार का लेख है।
5. श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6'' का है। इस पर संवत् 2040 का लेख है।
6. श्री अष्टमंगल यंत्र 6'' x 3.5'' का है। इस पर संवत् 2040 का लेख है। इस पर संवत् 2040 का लेख है।

निज मंदिर से बाहर निकलते समय दाएं :

1. ब्रह्मयक्ष की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2042 ज्येष्ठ वदि 7 का लेख है।

बाएं :

1. श्री अशोका देवी की श्वेत पाषाण की 13''' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2042 का लेख है।

सभामण्डप में दाएं :

श्री गौमुख यक्ष की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2042 का लेख है।

सभामण्डप में बाएं :

श्री सरस्वती देवी की श्वेत पाषाण की 8'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2042 का लेख है। **उपाश्रय बना हुआ है।** प्राचीन मंदिर के स्थान पर नूतन जिनालय बनाया गया। **मंदिर की चार दुकाने हैं,** दो किराये पर हैं। केसरघर बना हुआ है।

वार्षिक ध्वजा ज्येष्ठ वदि 7 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से निम्न करते हैं :

श्री शांतिलाल जी विराणी, मोबाइल : 97853 85524

श्री बाबूलाल जी सेठिया, मोबाइल : 97854 48848

श्री नाथूलाल जी सेठ, मोबाइल : 99287 95907

हमें तो केवल जगत कल्याण की भावना ही करनी है, बाद में कार्य तो कुदरत करेगी।

श्री विमलनाथ भगवान का मंदिर, आरणी

यह घूमटबंद मंदिर कपासन से 25 किलोमीटर दूर है। यह मंदिर करीब 70 वर्ष प्राचीन है। उल्लेखानुसार संवत् 1990 का निर्मित है।

मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :

1. श्री विमलनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 1984 वैशाख शुक्ला 13 शुक्रवासरे का लेख है।
2. श्री सुमतिनाथ भगवान की (मूलनायक के दांए) श्वेत पाषाण की 12'' ऊँची प्रतिमा है। इसकी प्रतिष्ठा होना शेष है।
3. श्री वासुपूज्य भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 12'' ऊँची प्रतिमा है। इसकी प्रतिष्ठा होना शेष है।

उत्थापित चल प्रतिमाएँ धातु की :

1. श्री आदिनाथ भगवान की 8'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 1511 माघ सुदि 5 लेख है।
2. श्री श्रेयांसनाथ भगवान की 8'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 1556 वैशाख वदि 11 का लेख है।

निज मंदिर के ऊपरी भाग दोनों तरफ कांच की जड़ाई की हुई है।

बाहर सभामण्डप में :

श्री माणिभद्र की श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है। **मंदिर की जमीन थी, वर्तमान में जानकारी नहीं है, जानकारी करनी चाहिये।** उपाश्रय बना हुआ है।

वार्षिक ध्वजा वैशाख सुदि 13 को चढ़ाई जाती है।

समाज की ओर से देखरेख श्री शांतिलाल जी सांखला करते हैं।

सम्पर्क सूत्र : फोन 01471-226228 मोबाइल : 99289 24517

प्राप्त तप का समाधान करें,
अप्राप्त तप को सामने से
बुलाने की जरूरत नहीं है।

श्री नेमिनाथ भगवान का मंदिर, डिण्डोली

यह घूमटबंद मंदिर कपासन से 15 किलोमीटर दूर है। पूर्व में यह सुराणा परिवार का, (श्री शीतलनाथ भगवान का) घर देरासर 300 वर्ष प्राचीन है, इसी परिवार ने भूमि भेंट दी और मंदिर निर्मित करवाया यह 100 वर्ष प्राचीन मंदिर है। जिसको तोड़कर नूतन जिनालय बनाया।

मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :

1. श्री नेमिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्याम पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2060 का लेख है।
2. श्री विमलनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 12'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2062 का लेख है।
3. श्री महावीर भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 12'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2062 का लेख है।

नीचे की वेदी पर :

श्री शीतलनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची **प्राचीन** प्रतिमा है।

उत्थापित चल प्रतिमाए धातु की :

1. श्री श्रेयांसनाथ भगवान की 7'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 1520 का लेख हैं।
2. वेदी के बीच दीवार के आलिए में प्रासाद देवी की 6'' ऊँची प्रतिमा स्थापित है।

बाहर निकलते समय दाई ओर :

1. श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 14'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2062 का लेख है।
2. श्री माणिभद्र की श्वेत पाषाण की 14'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2062 का लेख है।

बाई ओर :

श्री सरस्वती देवी की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2062 का लेख है।

वार्षिक ध्वजा फाल्गुण कृष्णा 13 को चढ़ाई जाती है।

देखरेख समाज के निम्न प्रतिनिधि करते हैं –

सम्पर्क सूत्र : श्री माणकचन्द जी कोठारी, श्री चांदमलजी लोढ़ा

फोन 01471-229318

इस जगत में जो अकड़कर रहे, वे मारे गए और जिनहोंने माफी माँगी, वे छूट गए।

श्री भीड़भंजन पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, भीमगढ़

यह घूमटबंद मंदिर कपासन से 20 किलोमीटर दूर है। यह मंदिर करीब 300 वर्ष प्राचीन बताया गया है। उसी स्थान पर 100 वर्ष पूर्व मंदिर बनाया। उसका भी जीर्ण-शीर्ण हो जाने से जिर्णोद्धार आचार्य श्री जितेन्द्रसूरि जी की निश्रा में सम्पन्न हुआ। मंदिर में प्रवेश के समय दोनों ओर स्थापित हाथी द्वारा स्वागत होता है। ग्राम 1000 वर्ष प्राचीन है, पूर्व में इसका नाम सरिस्का था।

मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :

1. श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2011 माघ सुदि 11 बुधवार का लेख है।
2. श्री सम्भवनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2011 माघ सुदि 6 का लेख हैं।
3. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2028 वैशाख सुदि 6 का लेख है।

उत्थापित चल प्रतिमाएँ व यंत्र धातु की :

1. श्री कुंथुनाथ भगवान की 9'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर संवत् 2025 वैशाख सुदि 5 का लेख है।
2. श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 5'' का है। इस पर संवत् 2024 वैशाख सुदि 6 का लेख है।
3. श्री अष्टमंगल यंत्र 6'' x 3.5'' का है। इस पर संवत् 2027 माघ सुदि 10 का लेख है।

बाहर सभामण्डप में – (आलिओं में) :

1. श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2024 का लेख है।
2. श्री केसरियानाथ भगवान की श्याम पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सवंत् 1959 का लेख है। **इस प्रतिमा को पुनः स्थापित किया गया।**
3. श्री माणिभद्र की श्वेत पाषाण की 6'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 1824 का लेख है।

बाई ओर :

1. गौमुख यक्ष की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2024 का लेख है।
2. श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है। इस प्रतिमा को पुनः स्थापित की गई। **दो प्रतिमाएँ** पूर्व में पंचायती दुकान में स्थापित थीं।

मंदिर की काफी जमीन है जो समाज के खाते में हैं, नोहरा व दुकाने हैं। **वार्षिक ध्वजा पोष वदि 10 को चढ़ाई जाती है।** देखरेख समाज द्वारा की जाती है। वर्तमान में प्रतिनिधि श्री लक्ष्मीलाल जी हिंगड़ हैं। विशेष देखरेख श्री शांतिलाल जी गांधी करते हैं।

सम्पर्क सूत्र – फोन 01471-226211, मोबाइल : 97926 93131

श्री सम्भवनाथ भगवान का मंदिर, बारू

यह घूमटबंद नूतन मंदिर कपासन से 15 व चित्तौड़गढ़ से 25 किलोमीटर दूर है। इसकी प्रतिष्ठा वि.सं. 2062 फाल्गुण कृष्णा 10 को सम्पन्न हुई। यह नूतन मंदिर है।

मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :

1. श्री सम्भवनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2062 का लेख है।
2. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 16'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2062 का लेख है।
3. श्री विमलनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2062 का लेख है।

उत्थापित चल धातु की प्रतिमा :

श्री महावीर भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2063 फाल्गुण कृष्णा 11 का लेख है।

वेदी की दीवार के बीच प्रासाद देवी की 6'' ऊँची प्रतिमा स्थापित है।

सभामण्डप में श्री महावीर भगवान की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची उत्थापित प्रतिमा है। इस पर सं. 2062 का लेख है। यह प्रतिमा रूद ग्राम के लिये अस्थाई रूप से यहाँ विराजित है।

बाहर निकलने पर – विभिन्न आलिओं में दाहिनी ओर :

1. श्री वर्द्धमान भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2062 का लेख है।
2. श्री त्रिमुख यक्ष की श्वेत पाषाण की 12'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2062 का लेख है।
3. श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 16'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2062 का लेख है।

बाई ओर :

1. श्री दुरितारी देवी की श्वेत पाषाण की 12'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2062 का लेख है।
2. श्री सरस्वती देवी की श्वेत पाषाण की 14'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2062 का लेख है।

वार्षिक ध्वजा फाल्गुण कृष्णा 10 को चढ़ाई जाती है।

इस मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री कमलेश जी बोहरा द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र : लोकेश जी, मोबाइल 99834 51022, 96100 04412

श्री जिनेश्वर भगवान का मंदिर, रूढ

यह शिखरबंद मंदिर कपासन से 20 किलोमीटर दूर है। मंदिर करीब 100 वर्ष प्राचीन है, जीर्ण अवस्था में है। जीर्णोद्धार कार्य चल रहा है। वर्तमान में आदिनाथ भगवान की एक प्रतिमा स्थापित है।

इस मंदिर के लिए श्री महावीर भगवान की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है, वर्तमान में यह बारू ग्राम के जैन मंदिर में अस्थायी रूप से मेहमान के रूप में विराजमान है। जीर्णोद्धार पूर्ण होने पर विधिवत रूप से विराजमान कराई जाएगी ।

यह मंदिर पूर्व में संवत् 1915 में श्री पन्नालालजी मोड़ीलाल जी द्वारा निर्मित है।